Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

BA Part I (H)
Paper I

सामाजीकरण का सिद्धान्त (फ्रायड) ⇒ फ्रायड ने समाजीकरण के सिद्धान्त को मानसिक क्रियाओं के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया है। फ्रायड के अनुसार मानव का समस्त व्यवहार काम-प्रवृत्ति (लिबिडो) से तय होता है। फ्रायड ने 'समाजीकृत आत्म' की समाजशास्त्रियों की अवधारणा को चुनौती दी और कहा कि 'स्व' स्व समाज में कोई तालमेल नहीं होता है। फ्रायड के अनुसार मानव व्यवहार का तार्किक पक्ष उसी प्रकार है जिस प्रकार किसी समुद्र में हिमखण्ड का बाहरी भाग होता है, जिस प्रकार हिमखण्ड का अधिकांश भाग पानी में रहता है, उसी प्रकार मानव व्यवहार का अधिकांश भाग भी अनपेक्षा व अचेतन आवेगों द्वारा संचालित होता है। फ्रायड ने 'स्व' को इड (Id) अहम् (Ego) और पराअहम् इन तीन भागों में बांटा है।

Id (इड) ⇒ अहम् की मूल-प्रवृत्तियां, प्रेरणाओं, असमाजीकृत इच्छाओं एवं स्वार्थों का योग है। इड के सामने नैतिक-अनैतिक, अच्छे-बुरे का कोई प्रश्न नहीं होता है। यह पाशविक प्रवृत्ति की निकट है जो किसी न किसी प्रकार सन्तुष्टि चाहता है।

अहम (Ego) – यह स्व का चेतन एवं तार्किक पक्ष है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करने का निर्देश देता है और इड पर नियन्त्रण रखता है। अहम भी इड के समान नैतिक-अनैतिक, लोभ व घृणा को अधिक महत्व तो नहीं देता फिर भी यह तार्किक व्यावहारिक है क्योंकि यह इड की परिस्थितियों के अनुकूल होने पर ही अपनी इच्छा की पूर्ति की स्वीकृति देता है।

Super Ego (पराअहम) – सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों का संयोग है जिसे व्यक्ति ने आत्मसात कर रखा है और जो उसकी अन्तरात्मा का निर्माण करते हैं।

फ्रायड के अनुसार इड और पराअहम् में सदैव संघर्ष पाया जाता है, क्योंकि समाज यौन इच्छाओं और आक्रामक भावनाओं पर प्रतिबन्ध लगाता है। सामान्यतः इड इस संघर्ष में हार जाता है किन्तु कभी-कभी वह पराअहम् की उपेक्षा भी कर देता है और व्यक्ति समाज विरोधी कार्य कर बैठता है। इस प्रकार फ्रायड स्व और समाज को एक दूसरे के पूरक न मानकर परस्पर विरोधी मानता है। फ्रायड के अनुसार 'इड' व 'पराअहम' के पारस्परिक संघर्ष की प्रक्रिया से ही व्यक्ति का समाजीकरण होता है।